वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

नवम्बर – 2016

* आप बचो औरों को बचाओ
* सफाई
* श्राद्ध का साधन
* शुभ संग्राम

महोत्सव मुबारक

सब सेवक वा सेविकाओं और पाठकों को यह जानकर खुशी होगी कि नई रोशनीऔर तेज के सैलाब, सर्व्वोच्च बरकतों के और हितों के सावन, हमारे और हमारे बज़ुरगों और और हमारी अगली पीढ़ियों और नसलों के एक मात्र बचावनहार और तारणहार परम पू० भगवान देवात्मा जी महाराज का शुभ मुबारक जन्म दिवस और महाउत्सव बहुत ही निकट आ गया है और अपनी योग्यतानुसार पूरे चाव भाव और शानशौकत के साथ मानया जा रहा है।

इस वर्ष यह शुभ दिन 12 दिसम्बर 2016 से 15 दिसम्बर 2016 तक दिन सोमवार से वीरवार तक पूरे जोश, खुशी और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

यह एक विशेष पर्व है और महा उत्सव है जहां बहुत सारे धर्म सम्बन्धी, आठ पापों और मिथ्या त्यागी सैंकड़ों धर्म सम्बन्धी इकट्ठे होंगे। उच्च विषयों पर भाषण, उपदेश वा तकरीरें होंगी, सुन्दर भजनों का गान होगा। सहायकारी शक्तियों की सहायता से अपूर्व पाक प्रेरणाएं, वलवले, उमंगे वा जोश पैदा करने का कारण बनेगा। जिसमें हमारा ध्यान अपने जीवनों की ओर, अपने सच्चे भले अपने परिवार के भले की ओर जाएगा। नाना पक्षों में हमारा हित वा भला होगा। हमें हमारे उपकारी, हितकारी और तारणहार को देखने, जानने का योग्यता के अनुसार, उनके प्रति झुकने का, धन्यवाद देने का, उनकी सब इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए नया जोश, बल और उत्साह मिलेगा। हमारे हृदय पाक खुशीयों, शान्ति वा उत्साह से भरेंगे।

इसलिए हमें ऐसे सौभाग्य भरे, उच्च हित वा बरकतों के प्रदाता महा उत्सव में हर कीमत पर अवश्य पहुँचना चाहिए और अपने परिवारों को भी साथ लाकर लाभ उठाना चाहिए।

महोत्सव पर पहुंचने के लिए जिन्हें आवश्यक है अपनी छुट्टियों आदि का प्रबन्ध करलें। अपने बिस्तरे वा सुन्दर पोशाकें भी तैय्यार कर लें।

उच्च साधनों, हितकर पुस्तकों और महोत्सव अंक पत्रिकाओं का पाठ वा हितकर गानों का गान आदि करके हृदय को तैय्यार कर लेना चाहिए। और अधिकारी जनों को भी अधिक से अधिक संख्या में लाने का प्रयत्न करें।

जिनके लिए मुमकिन हो तो इस प्यारे, हित भरे पर्व के निर्विघ्न कामयाबी से पूर्ण होने के लिए शुभ कामना करनी चाहिए।

<u>आरम्भिक दिन :</u> 14 दिसम्बर2016 को आरम्भिक दिन है। उसको सुबह उच्च साधनों, प्रभात फेरियों और सभा करके पाकखुशी से मनाना चाहिए।

आपका साथी सेवक,

मन्त्री

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 10
नवम्बर 2016
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आप बचो औरों को बचाओ

गुरू महाराज की समाज से सम्बन्ध रखने वाले जन यह पद अकसर जान जाते हैं और गाते रहते हैं "देव गुरू जी की आज्ञा हमको, आप बचो औरों को बचाओ" परन्तु इस पद में जो विशेष तत्व भरा हुआ है, उसकी जाग्रति शायद ही किसी को हो और उसे शायद ही कोई इसे जीवन में उतारता हो।

गुरू महाराज का कारज अनोखा है, आद्वितीय है, इसलिए इस पद को सार्थक करने के लिए विशेष तप वा संग्राम की आवश्यकता है।

गुरू महाराज का कारज श्रद्धेय पंडित हरनरायण जी अग्निहोत्री जी ने, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने, उच्च परलोक वासी श्रद्धेय श्रीमान निर्मल सिंह जी ने, स्वामी गोबिन्द राम जी ने, श्रद्धेयश्रीमान गुरूवन्त सिंह जी ने किया है, जिन्होंने अपने जीवन में और दूसरों के जीवन में उच्च परिवर्तन पैदा किए। उनकी घोर तपस्या और उनके विशेष सहयोगी कर्मचारियों के सहयोग से गुरू महाराज का मिशन अब तक कुछ न कुछ चलता रहा है। उपरोक्त सब जन गुरू महाराज के सीधे सम्पर्क से प्रभावित थे। उन्होंने न केवल गुरू महाराज के दर्शन किए हुए थे, गुरू महाराज की अध्यात्मिक जान संचार करने वाली वाणियां भी सुनी हुई थी। किसी अंश गुरू महाराज की शक्ति उनमें संचार होती रही थी। उन्होंने अपने जीवन को भी उच्च बनाया और अधिकारी हृदयों के भीतर भी उच्च परिवर्तन पैदा किया। गुरू की बहाई हुई परहित की धारा को बहाए रखा। उक्त हस्तियां आप बची और सैंकड़ो हस्तियों को भी बचाया।

एक एक करके उक्त हस्तियां उच्च लोक में चली गई, मृत्यु सबके लिए अनिवार्य है। अब गुरू महाराज का काम काफी सीमा तक रुक गया है। सभाएं तो होती हैं, उनमें बातें भी बहुत बताई जाती हैं। कुछ उमर दराज वा नौजवान जोश भी बहुत दिखाते हैं, परन्तु उच्च फल नदारद हैं। जो कुछ भी कोई करता है, वह समय और रस्म पूरी करता है। इसी में शुक्र मनाते हैं। कहीं कोई रिटायर मास्टर, कहीं कोई पुराना फौजी सभा करवा देता है, कहीं और कोई मुलाज़िम उपदेश दे देता है, कहीं कोई सत्संग के लिए आए जन भी उपदेशक बन जाते हैं। सभा करवाने का मौका पाना बहुत बड़ा ओहदा महसूस होता है। जिन जनों ने नये पद सम्भाले हैं, वह भी अपने फर्ज़ की पूर्ति के लिए सभा करवा देते हैं। इस प्रकार जहां तक सभाओं और

उपदेशों का सम्बन्ध है, तो कुछ न कुछ काम तो होता है। परन्तु अधिकारी जनों के भीतर उच्च परिवर्तन भूतकाल का सपना बनकर रह गए हैं। देव प्रभावों द्वारा उच्च परिवर्तन प्राप्त जनों के बिना और आगे अपने जीवन में उच्च परिवर्तन वा उच्च भाव पैदा करने के कठोर साधनों की कमाई के बिना सारी समाज की ही रूप रेखा का बदल जाना, कदरों और कीमतों का बदल जाना स्वभाविक है। सारी संस्थाओं को जिस लक्ष्य के लिए बनाया गया था, उस लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाना, धर्म के उच्च नियमों का टूट जाना, उसके साथ साथ मक्कारी, राजनीति, धोख़ेबाजी का आना और ईमानदारी पर भी प्रश्न चिन्ह लग जाना अवश्यम्भावी है।

देवात्मा सत्गुरू ने बार बार फरमाया है कि "मेरा काम बढ़ने और फैलने के लिए है" केवल इस भविष्य वाणी पर आधार रखकर किसी गल्तफहिमी में रहना बुद्धिमानी नहीं। यह समझना कि गुरू का काम चल रहा है और आगे भी चलेगा, इसमें कोई अन्तर नहीं आया, यह सचाई से आंखें बन्द करना है।

देवात्मा ने यह भी तो कहा है, "देव समाज का काम नेचर के विकासकारी नियम के अनुसार है। समाज का काम फैलने और तरक्की करने के लिए है, यदि तुम्हारे द्वारा नहीं फैलेगा तो किसी और के द्वारा फैलेगा, इस देश के द्वारा नहीं फैलेगा तो और मुल्कों के द्वारा फैलेगा"।

गुरूमहाराज का काम सभाओं, उपदेशों के बावजूद क्यों रुक गया है, क्यों नहीं हो रहा, इसका विशेष कारण यह है कि काम करने वालों ने ऊपर लिखे पद के महत्व को न समझा है और न हृदयग्राही किया है। दूसरों के हृदयों पर काम करने के लिए, नेचर ने एक ठोस शर्त रखी है। वह यह है कि पहले आप बचो, फिर ही तुम दूसरों को बचा सकते हो। अपने आपको बचाना अपने अन्दर के नीच अनुरागों (अंह, स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, मान, बड़ाई प्रशंसा, बेईमानी, ईर्षा द्वेष) से बचना है। इसके लिए घोर संग्राम वा तपस्या करनी पड़ती है, आप इन नीच अनुरागों से उद्धार पाकर ही, दूसरों को उनसे बचाने के योग्य बनते हो। जैसे अनपढ़ जन पहले आप पढ़े बिना दूसरों को पढ़ाने का काम नहीं कर सकता, उसी प्रकार मोक्ष और विकास के कड़े साधनों के बगैर गुरू का कारज नहीं हो सकता। केवल बुद्धि, चतुराई और मानसिक ज्ञान से कोई सभा करवाने से दूसरों के जीवनों में उच्च परिवर्तन पैदा नहीं किया जा सकता। अपना जीवन बनाना किसी नीच भाव को मारना, कोई उच्च भाव पैदा करना वा बढ़ाना है। इसके लिए ज़ोरदार संग्राम के बिना गुरू महाराज का अद्वितीय कारज नहीं हो सकता।

गुरू महाराज के इस विषय में फरमान, इस सचाई को पूरी तरह साफ करते हैं। गुरू महाराज ने जगह जगह फरमाया है, उसका दीनता पूर्वक बार बार पाठ हमारी आंखें खोल सकता है और सदमार्ग दिखा सकता है: -

* जब तक काम करने वाले का अपना जीवन न बनें, तब तक वह किसी और का जीवन नहीं बना सकता।

* वह संस्था कोई तरक्की नहीं कर सकती, कि

जिसका इतना ही काम हो कि केवल उपदेश दे देना है।

* तुम लोग यह चाहते हो कि कोई अच्छा ब्यान हो जाए, और लोग कहें कि अच्छी सभा हुई और बस, जबकि साधन का उद्देश्य यह है कि जीवनों में उच्च परिवर्तन आए और आत्मा कुछ न कुछ gain करके जाएं।

* हमें ऐसे आदमियों की आवश्यकता है कि जो सचमुच change लाएं।

* हमारे यहां समाज में ऐसे जन हैं कि जो सीखना नहीं चाहते, परन्तु सिखाना चाहते हैं। मेरी पोज़ीशन यह है कि पहले सीखूं फिर सिखाऊं।

यदि तुम सचाई के साथी बनना चाहते हो, तो तुम्हें अपने नीच अनुरागों के विरूद्ध लड़ना होगा। तुम अपने आपको बनाओ, फिर दूसरों को बनाने का काम करो। पहले सचाई को अपने जीवन में लाओ और फिर दूसरों के जीवन में इसको लाने का संग्राम करो।

* निज के साधनों पर जिन्दगी का निर्भर है। प्रचारकों को इस ओर बहुत ध्यान देना चाहिए। निज के साधनों से कभी लापरवाह नहीं होना चाहिए।

* अकांक्षित परिवर्तन के बिना, सब विनष्ट होने के लिए है, ऐसी हालत रखकर बेशक कोई खुश रह सकता है, परन्तु उसका नष्ट होना आवश्यक है।

* यदि तुम स्वंय नीच गतियों से नहीं बचते, तो तुम किसी और को नीच गतियों से नहीं बचा सकते, डींग मार सकते हो।

* तुम जीवन लाभ करके ही औरों को जीवन दे सकते हो।

* ऐसे आत्मा मिलें, जो आप नष्ट न होंना चाहें और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष पाकर, और उच्च भावों को प्राप्त होकर, उच्च बनना चाहते हों। जो और लाखों और करोड़ों आत्माओं को बचाना चाहते हों.....।

उक्त फरमान से साफ स्पष्ट होता है, कि गुरू महाराज का काम करने वालों को निराकंक्षित परिवर्तन जो आरम्भ में आ गया, उसको लेकर ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, उन्हें और आगे, और उच्च परिवर्तन प्राप्त करने का भरसक संघर्ष करना चाहिए। जिस वर्कर के अन्दर, अपने नीच अनुरागों से बचने का कोई फिक़र नहीं, कोई संग्राम नहीं और जिसने किसी भी नीच अनुराग से मुक्ति प्राप्त नहीं की, वह अपने उपदेशों से किसी और को नीचता से नहीं बचा सकता, जिस जन ने स्वंय कोई उच्च भाव पैदा नही किया, उसकी प्राप्ति के कोई साधन नहीं किए, वह किसी दूसरे का कोई भला कैसे बना सकता है?

गुरू महाराज का काम करने वाले के भीतर पहले आप पाप और झूठ की नीच गतियों से बचने का स्वंय फिकर होना चाहिए। केवल उपदेशों से दूसरों को पाप झूठ से नहीं बचाया जा सकता।

पहले हमारे भीतर अपने आत्म हित के लिए नीचता से बचने के लिए ज़ोरदार संग्राम होना चाहिए। देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए घोर यत्न और कड़ी लगन चाहिए। यदि हम देव प्रभाव पाकर अपनी किसी नीचता से बचने का और किसी उच्च भाव की प्राप्ति

का आप लगातार कोई साधन संग्राम नहीं करते तब तक हम सच्चे अर्थों में गुरूमहाराज का कोई काम नहीं कर सकते। पैदायशी उपदेशक बनकर ही हम कोई काम कर सकेंगे, यह पूर्णत: असम्भव है। दूसरों को बचाने से पहले अपने आपको नीच जीवन से बचाना अति आवश्यक है। इस शर्त को पूरा करने के बिना लाख चाहकर भी गुरू महाराज का असली काम नहीं कर सकते। अपने नीच जीवन से निकलने के लिए निरन्तर संग्राम जारी रखने की आवश्यकता है।

हम लोगों को जो गुरू महाराज का काम करने का दावा करते हैं, हल्दी की गांठ लेकर पंसारी बनने का गर्व नहीं पालना चाहिए। हमें अपने आलस्य अनुराग, काम अनुराग, धन, धरती अनुराग, अंहज़ात घमंड, मान बड़ाई, सन्मान, पद, की भयानक कैद से मुक्त होने की आवश्यकता है। जितनी सीमा तक हम इनसे मुक्त हो सकेंगे और उच्च भाव प्राप्त कर सकेंगे, उसी मात्रा में हम गुरू महाराज का कारज कर सकते हैं और अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

बलदेव सिंह

मैं यह प्रयत्न करता हूं कि यह शुभ और अशुभ के जो भिन्न भिन्न मार्ग हैं, उनको तुम्हारे सामने प्रगट करू और देखूं कि तुम इन मार्गों में से किस को चुनते हो? शरीर के सम्बन्ध में मैं तुम्हें असयंम से हटाकर सयंमी बनाना चाहता हूं। क्या तुम संयमी बनना चाहते हो या असयंमी ही रहना चाहते हो? यदि असंयमी ही रहना चाहते हो, तो इसका तात्पर्य यह कि तुम रोग, दुर्बलता, बुरी शकल और कष्ट चाहते हो, जोकि सब कुछ असयंम से ही आता है। आत्मिक जीवन में भी इसी प्रकार से असंयम होता हैं, उसमें भी रोग, पीड़ा, दुर्बलता और कुत्सितपन आता है। शरीर और आत्मा दोनों ही नेचर में हैं और दोनों पर नेचर के नियम काम करते हैं। जब आत्मा नीच रागों के सुखों के लाभ की ओर जाता है, तब उसमें भी रोग, दुर्बलता, भद्धापन और दुख उत्पन्न होता है। जो जन आत्मिक जीवन में सचाई, भलाई का आकाक्षी नहीं, वह झूठ और बुराई आकांक्षी वा प्रेमक अवश्य है। मैं चाहता हूं कि जिन जिन के लिए सम्भव है, वह आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सच्चाई और भलाई के साथी बन सकें और मिथ्या और बुराई के प्रेम से उद्धार पा सकें।

– देवात्मा

सफाई

प्रत्येक मनुष्य को जन्म से विरासत में ही अच्छे और घटिया किस्म के बोध प्राप्त होते हैं, उसके बाद जैसे वातावरण में वह प्रतिपालित होता है, वह बोध घटते और बढ़ते है। कई बहुत उच्च कोटि के बोध रखने वाले जन घटिया बोध रखने वाले जनों में घिरे रहकर अपनी उस योग्यता को खो बैठते हैं। कई बहुत निम्न किस्म के बोध रखने वाले जनों को उच्च कोटि के बोध रखने वाले जनों में रहने का सौभाग्य मिल जाता है, तो उनकी योग्यता के अनुसार उनके बोधों का विकास हो जाता है।

बोध क्या है? किसी भी विषय में अनुभव, जानकारी रखना और उसकी रक्षा और उन्नति के लिए क्रियात्मक रूप से कुछ करना। यह अनुभव, जानकारी वा क्रियाएं निम्न श्रेणी की हों तो इन्हें निम्न बोध कह सकते हैं, यदि उच्च श्रेणी की हों तो उच्च बोध कह सकते हैं।

उच्च बोधों की बहुत सी श्रेणियाँ हैं, जिनको जानना, समझना और उन पर अमल करना प्रत्येक मनुष्य की जन्मजात योग्यता और वातावरण पर निर्भर है। सफाई, तरतीब का बोध निम्न बोधों की श्रेणी में आता है, परन्तु जैसे गिनती सीखे बिना कोई हिसाब नहीं सीख सकता, उसी प्रकार यदि निम्न बोध भी मनुष्य के भीतर नहीं हैं, तो उच्च बोधों की कल्पना निरर्थक है।

सफाई के कई क्षेत्र हैं। सर्वप्रथम व्यक्ति की अपने शरीर, कपड़ों, बिस्तरों की सफाई, रसोई घर, स्नान गृह, सोने के कमरे और अन्य कमरों की सफाई। पुस्तकों ओर घर में अन्य समान की सफाई आदि – आदि।

आधुनिक युग में सफाई, तरतीब और सुन्दरता के बोध काफी उन्नत हुए हैं। घरों को सुन्दर रखने, सजाने में काफी होड़ सी लगी हुई है। कीमती सामानों से घर को सुन्दर रूप दिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को भी सजाने धजाने में काफी आगे बढ़ गया है।

हम यहां इन विषयों को लेकर कुछ गहराई में जाएं तो अपने आपको टैस्ट कर सकते हैं कि कहाँ तक हमारे भीतर सचमुच सफाई का बोध है और कहाँ तक हम केवल दिखावे के लिए ही ऊपरी तड़क भड़क रखते हैं।

सर्वप्रथम अपनी निज की सफाई को देखें। नहाना आज के जीवन का आवश्यक अंग बना हुआ है, परन्तु इसमें भी हमारी अबोधताएं हैं। नहाते समय शरीर को रगड़ कर नहाया जाए तो सफाई के साथ – साथ नई स्फूर्ति आती है। विशेष रूप से बाजुओं का कोहनी वाला भाग, पैरों की एड़ियां आदि अच्छी तरह साफ की जाएं और थोड़ा सा फटने का आभास हो तो अच्छी तरह उनको रगड़ कर उस पर वैसलीन लगाकर कुछ देर जुराब आदि डाली जाए तो पैर साफ और मुलायम रहते हैं। कई स्त्रियां जो पढ़ी लिखी होकर, कीमती साड़ियां पहन कर भी जब चलती हैं तो उनकी फटी हुई एड़ियां

बहुत फूहड़पन का नज़ारा प्रस्तुत करती हैं। हमारे देश में जितनी धूल मिट्टी है उसके हिसाब से रात को सोने से पहले नहाने से अधिक सफाई रहती है। यह प्रत्येक मनुष्य की सुविधा पर निर्भर है। परन्तु हाथ, मुंह, पैर घोकर और रात को ब्रुश करके सोना अच्छे बोधों का परिचायक है। सोते समय रात को साफ सुथरे कपड़े बदलना, आजकल के फैशन में शुमार हो रहा है, जो बहुत ही अच्छी आदत है।

इसके भिन्न अपने नीचे के कपड़ों को दो बार नहीं तो एक बार अवश्य बदलना चाहिए। इससे सफाई भी रहती है और यह शरीर की तन्दरुसती के लिए भी आवश्यक है।

इससे आगे हम अपना स्नान गृह देखें कि कहां तक साफ है। उसमें कपड़ों के ढेर न पड़े हों, मैले कपड़ों का स्थान अलग हो। कई घरों में स्नान गृह में गीले कपड़े पड़े रहते हैं, वह बहुत भद्दा दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इससे आगे नहाने की बाल्टियां बिल्कुल साफ हों, कम से कम हफ्ते में दो बार विम और ब्रुश से रगड़ कर उन्हें धोया जाए। मग जो नहाने या लैटरीन के लिए इस्तेमाल होते हैं उन्हें रगड़कर धोया जाए ताकि उन पर जरा सी भी मैल नजर न आए। कई अच्छे-अच्छे घरों में जहां कीमती सामान तो भरा होता है, परन्तु बाल्टियां और मग मैले कुचैले होते हैं, कई बार उन्हें हाथ से पकड़ने में भी दिक्कत अनुभव होती है। इस ओर हर स्त्री पुरूष को सचेत रहने की आवश्यकता है तो ऐसे काम में पति भी सहायता कर सकता है। वाशबेसिन, टूटियां, लैटरीन या पाट सब पुराने भले ही हों परन्तु उनकी नियमित सफाई आवश्यक है। बाथरूम में घुसते ऐसा अनुभव हो कि आप यहां बैठकर विश्राम कर सकते हैं। हाथ पोंछने के तौलिए, यदि परिवार बड़ा है तो दिन में 2-3 बार बदलने चाहिएं। गीले तौलिए से बार-बार हाथ पोंछते रहने से हाथ भी साफ नहीं होते और बदबू भी पैदा हो जाती है, विशेष रूप से बरसात के समय में यह सावधानी और भी आवश्यक है। नहाने के लिए सब का अपना-अपना अलग तौलिया आवश्यक है। साबुन भी सबका अलग हो तो अच्छा है।

आधुनिक युग में बाथरूम और रसोई घर को बहुत उत्तम ढंग से बनाया जाता है। लेकिन जिनमें सफाई का बोध नहीं वह कुछ ही समय बाद उसकी दुर्दशा कर देते हैं। रसोई की दीवारें, फर्श, गैस का चूल्हा नियमित सफाई चाहते हैं। जहां-जहां बर्तन धोने से छीटें आदि पड़ते हैं, उन्हें बाद में साफ करना आवश्यक है। रसोई में प्रयोग में आने वाल सव चीज़ों की हर रोज़ झाड़ पोंछ आवश्यक है। डिब्बे आदि जिनमें आवश्यक चीज़ें डाली जाती हैं, उन्हें महीने में एक बार और ढकनों आदि को हररोज़ पोंछना आवश्यक है।

रसोई में प्रत्येक वस्तु का स्थान बनाया हो, ताकि आपको जल्दी के समय ढूंढने में असुविधा न हो। मुझे एक पढ़ी लिखी कालिज में लैकचरर के घर जाने का मौका मिला, खाने का समय था, मैंने सोचा कि सब्ज़ी आदि काटने में मैं सहायता कर दूं। जब सब्ज़ी काटने के लिए मैंने चाकू लिया, तो सचमुच उस चाकू को हाथ लगाना कठिन हो गया, उस के हत्थे पर मैल के कारण वह कूड़े में फेंकने के योग्य लगता था।

चाकू, चायपोनी और ऐसी अन्य चीजें अच्छी तरह साफ रखनी चाहिएं।

इससे आगे बिस्तरों की सफाई बहुत आवश्यक है। थके हारे जब रात को साफ सुथरा बिस्तरा मिले तो मनुष्य की थकावट दूर हो जाती है। जितनी जल्दी चदरें, सिरहाने और बैडकवर बदले जाएंगे, उतने ही अधिक साफ रहेंगे। कई घरों में गिलाफ तो साफ चढ़ा देते हैं, परन्तु नीचे का सिरहाना बेहद गन्दा होता है। ऊपर के गिलाफ के नीचे यदि सिरहाने के दो कवर हों तो रूंई आदि निकाले बिना एक गिलाफ धोते रहकर सिरहाना साफ रह सकता है।

अब कमरों में जो सामान रखा गया है, वह इतना न हो कि हररोज़ उसकी झाड़ पोंछ न हो सके। प्रत्येक वस्तु की हररोज़ सफाई करने से ही सफाई रह सकती है। जिन दरवाजों का अधिक प्रयोग होता है, वहां पर मैल जम जाती है, यदि 1-2 महीने में उन पर थोड़ा सर्फ या विम लगाकर साफ किया जाए तो वह मैल नहीं जमती। कई घरों में दरवाज़े इतने मैले होते है कि उनके हैंडल को हाथ लगाने को दिल नहीं करता। यही हाल स्विचों का है। यदि मेन स्विच बन्द करके 2, 3 महीने में एक बार स्विचों को समझदारी से थोड़ा सा गीले कपड़े पर Spray आदि लगाकर साफ किया जाए तो वह सुन्दर दिखने लगेंगे। स्विच और गन्दे दरवाजे सारे घर की गन्दी तस्वीर पेश करते हैं। आजकल तो सफाई के बाज़ार में इतने साधन हैं, इन चीजों पर कंजूसी न करके हमें अपने घर को सुन्दर बनाने के लिए यह खर्च अवश्य करना चाहिए। पोचा मारने के लिए भी साफ पानी और पोचे का इस्तेमाल होना चाहिए। सोफे, बैड आदि के नीचे से नियमित सफाई करनी आवश्यक है।

इस प्रकार सफाई के सम्बन्ध में नियमित रहने से जहां हम अपने आपको, अपने घर को और अपने चारों तरफ के वातावरण को साफ सुथरा रख करते हैं, वहीं अच्छे बोध विकसित कर सकते हैं और स्वस्थ रहने में आवश्यक योगदान दे सकते हैं।

(सुरजीत बराड़)

तुम्हारे सामने दो बातें अच्छी तरह साफ होनी चाहिए, एक तो यह कि हम नेचर में कोई क्रिया करके उसके फल से नहीं बच सकते। यह फल दो ही प्रकार के हो सकते हैं, शुभकर या अशुभकर। दूसरे यह कि यदि इस तत्व को उपलब्ध करके भी तुम्हारे दिल में शुभ के पथ पर चलने की कोई अकांक्षा न जागे, तो नचर के अटल नियम के अनुसार तुम्हारा अपने लिए और औरों के लिए अहितकर बनना अवश्यक है। यह सचाई उन्ही जनों को नज़र आ सकती है, कि जिनमें मेरी रोशनी पहुंच सके, औरों को नहीं।

– देवात्मा

श्राद्ध का साधन

प्रिंसीपल डाक्टर शशी बाला जी खेड़ा सम्बन्धी श्राद्ध का साधन ईतवार 9 अक्तूबर 2016 को 2 बजे रखा गया। इसकी सूचना सस्कार वाले दिन वा धर्म जीवन द्वारा दे दी गई थी।

इस उद्देश्य के लिए शशी जी के निवास के निकट पार्क में सफाई करवा कर और शामियाना लगाकर, बहुत सफेद चादरों की बिछाई करके 60 के लगभग कुर्सियां लगाकर बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया गया। पूजनीय भगवान की सुन्दरी छवि को ऊंचे स्थान पर रखा गया। यह सारा काम जगदीष जी की देख रेख में हुआ। चमन जी ने हमेशा की तरह बहुत सहायता की। बहुत सारे हारों और फूलों का प्रबन्ध किया गया। बिजली के पंखों का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। लाऊडस्पीकर का भी प्रबन्ध किया गया। शशी जी की फोटो के पास उनकी ऐनक, पुस्तकें आदि उनके प्रयोग की वस्तुएं रखी गई। कुछ पुस्तकें लोगों में बांटने के लिए भी रखी हुई थी। एक और शामियाना लगाकर जलपान का प्रबन्ध किया गया।

चण्डीगढ़, पंचकूला, मोहाली, दड़वा, अम्बाला, यमुनानगर, शादीपुर, गोनियाना, संगरूर, मल्लेका, धर्मशाला (हिमाचल) आदि से, और जगदीष जी, सुभाष जी और उनके भाई के परिवार, श्रीमान धर्मवीर जी के सपुत्र, 36-बी B.Ed. college की प्रिंसीपल और कौंसलर साहिबा, यूनिवर्सिटी के कई प्रोफैसर, और कई माननीय जन वा पड़ोसी, शशी जी के इकलौते पुत्र आशीष जी जो सस्कार से पहले अमरीका से पहुँच गए थे 125 जनों से ऊपर ही हाज़री थी।

ठीक समय पर सभापति जी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सुन्दर फूलों के हार के द्वारा गुरूमहाराज की सुन्दर फोटों का अर्चन किया और सबने खड़े होकर देव स्तोत्र का गान किया ओर सभापति जी ने व्याख़्या की। फिर शशी जी का फोटा द्वारा अर्चन किया गया। सबसे पहले देव आशीष जी, डाक्टर विनोद जी खेड़ा, डाक्टर वनीत जी, सभापति जी ने फूलों के हार द्वारा सन्मान किया, फिर बहुत से हाजरीन ने हारों वा फूलों से सन्मान दिया।

फिर सभापति जी ने विनीत भाव से सहाय प्रार्थना की और सभा की मोटी रूप रेखा का विवरण दिया।

जगदीष जी ने परलोक के सम्बन्ध में भजन का गान किया और सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया।

सभापति जी ने बताया कि देव समाज एक विज्ञान मूलक, समाज सुधारक और अध्यात्मिक कल्याण की अनोखी विचारधारा है।

इसके संस्थापक देवात्मा अनोखा देव जीवन रखते हैं। सधारणतः, धर्मों ने विज्ञान का विरोध किया है। पर देव समाज में धर्म विज्ञान का पूर्ण साथी है। हमारे भीतर कई प्रश्न उठते हैं, मनुष्य क्या है? उसके जीवन का लक्ष्य क्या है? शरीर के मरने के बाद क्या

होता है?

विज्ञान की उमर धर्म के मुकाबले में बहुत कम है। धर्म डर और लालच से पैदा हुए हैं। वह ज़रूरत पर आधारित हैं। पूजा, पाठ का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। धर्म वास्तव में अपने ही आत्मा के सच्चे ज्ञान और कल्याण का नाम है। मनुष्य ने अपने जीवन की रक्षा और विकास करना है। मनुष्य की मूल इच्छाएं सच्चे धर्म के द्वारा ही हो सकती हैं। धार्मिक ग्रन्थों में धर्म का नाम तो है, पर ज्ञान नहीं। जीवनी शक्ति ही आत्मा है। शारीरिक, मानसिक और भाव शक्तियां, और निर्माणकारी शक्तियां ही आत्मा की गठन हैं। हानिकारक प्रजातियां नष्ट हो रही हैं। विकासकारी प्रजातियों का विकास हो रहा है। बुरे जीवन द्वारा नीच गतियां होती हैं, जिनसे विनाश लाज़मी है। धन का प्रेम, दुख, लड़ाई, झगड़े करवा कर महा हानि करता है। नीच भाव आत्मघाती बनाते हैं। ईमानदारी, पवित्रता, शुक्रगुज़ारी जीवनदायक भाव हैं। परोपकार, पर सेवा जीवन के लिए अमृत हैं। किसी का भला करने में अपना भला है और बुरा करने में अपना बुरा होता है। परोपकारी की संगत आत्मा की दूसरी खुराक है।

स्वर्ग, नर्क, आवागमन कुछ नहीं है। जीवनी शक्ति अपने जीने के लिए इसी शरीर से सूक्षम सैल लेकर सूक्षम शरीर बनाती है और अपने नीच वा उच्च कर्मो के हिसाब से परलोक में एक वा दूसरे लोक में वास करती है। दूनियवी बन्धन परलोक में जाने में बाधक हैं।

परलोक वासी सम्बन्धी को भुलाना नहीं, उनकी सेवाओं और गुणों को याद रखना है, उनके प्रति जो ग़ल्तियां है, उनके लिए क्षमा मांगनी है ओर उनके भले की कामना करनी है। शशी जी बहुत योग्य और बहुत अच्छा दिमाग रखती थी, Ph.d थी। किसी मिथ्या विश्वास को नहीं मानती थी। सफाई और सादगी पसन्द थी। संग्राम शील थी। श्रद्धावान थी, देवात्मा की पूर्ण विश्वासी थी। कितनी किताबों की proof-reading की। सत्संग, सभाओं में नियमित रूप से आती थीं। सेवा करके, दान देकर अपना भला करती रहती थीं। स्थाई घृणा नहीं करती थी। उनके प्रति जो ग़ल्त जाता उसके भले की भी कामना करती थी। उसके बाद सभापति जी ने भाव प्रकाश करने के लिए निवेदन किया :-

<u>डा० विनोद चन्द्र जी खेड़ा</u> :- हमारी बहुत सम्मान और स्नेह के योग्य प्रिय शशी बहिन जी, सत्य देव की जय के साथ प्रणाम करता हूं।

हमें बहुत शोकग्रस्त करके आप पिछले रविवार और सोमवार की रात्रि में इस क्षण भंगुर संसार से कूच कर गई। हमारे बहुत बड़े उपकारी श्रद्धेय माता पिता के जाने के बाद से आपको फूलों की तरह से बहुत सम्मान व स्नेह के साथ रखने का पूरा प्रयास किया गया जो आपकी अन्तिम बीमारी में सफल न हो सका।

आपने अपनी छोटी सी आयु में मुझे गोदी में लेकर खिलाया था। जिस उपकार को मैं सारी आयु स्मरण करता रहा हूं। कभी कबार आपसे विचारों का कोई छोटा मोटा मतभेद होने पर जो आपको कोई कष्ट हुआ हो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं।

आप हमारे परम उपकारी भगवान देवात्मा के लिए गहरी श्रद्धा रखती थीं। किसी विशेष परिस्थिती के अतिरिक्त सदैव सभाओं में सत्संग में योग देकर लाभ उठाती थीं। भगवान देवात्मा की शिक्षा को समझने का प्रयास करती थीं। उनकी पुस्तकों को प्रकाशित करने हेतु मुझे आपने जो सहयोग दिया उसकी विशेष कमी सदैव खलती रहेगी। अपने इन पुस्तकों को स्वयं टाईप करने के लिए हिन्दी में टाईपराईटिंग करना सीखा। बुखार होने वाले दिन भी सुबह 6 बजे आप कम्पूयटर पर पुस्तक टाईप करने बैठी हुई थीं।

आपकी चुस्ती एवं स्फुर्ती देखते ही बनती थी। हर काम करने के लिए फौरन दौड़ पड़ती थी। श्रद्धेय पापा जी का Revised जीवन चरित्र टाईप करके उसे विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी से Edit करवाना चाहती थीं जो अधूरा रह गया है।

7-8 पुस्तकें अभी टाईप हो चुकी हैं जो फाईनल प्रूफ रीडिंग के लिए अधूरी पड़ी हैं। उन्होंने किस प्रकार अनथक परिश्रम करके भगवान के मिशन की सब पुरानी और नई संगीत पुस्तकों के भजन एक नई पुस्तक संकलित संगीत सुधा के नाम से तैयार की, यह उनका बहुत बड़ा योगदान अनुभव होता है।

अपने प्रिय पुत्र देव आशीष के संबंध में बार बार यह कहती थीं कि उसे पापा जी, जीजी और तुम भाई बहिनों ने पाला है ओर इसके लिए समय समय पर अपने कृतज्ञता के भावों का प्रकाश करती रहती थीं।

अन्तिम दिनों में अपनी सेवा करने वालों को हाथ जोड़ कर बहुत ज़ोर लगाकर जब उनसे बोला नहीं जा रहा था धन्यवाद देती रहीं। परलोक में ऐसी सुन्दर आत्मा को निर्विघ्न रूप से वास करने का अवसर मिले और उन्हें अच्छे से अच्छा वातावरण व उच्च धर्म सम्बन्धी अपना मार्गदर्शन करके उनके जीवन के विकास में सहायक हो सकें, ऐसी हृदयगत कामना है।

आपका उपकृत भाई, विनोद।

<u>डा० विनीत चन्द्र जी खेड़ा</u> :- मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं जो मुझे 5 माँए मिली- मेरी माता जी, मेरी मासी, मेरी दो बड़ी बहनें और एक उनकी पक्की सहेलियों में से एक उन सब मे शशी बहन जी मेरे साथ सबसे लम्बा समय रही। वह मुझ से 10 साल बड़ी थी। इसलिए वह मुझे स्कूल के लिए तैयार करती, मेरे बाल कंघी करती, मेरे कपड़े सिलती, यद्यपि दूसरे भी थे जो ये सब खुशी खुशी मेरे लिए कर सकते थे, परन्तु मुझे बहन जी से ही करवाने में अच्छा लगता और उन्हीं से करवा कर रहती।

जब मैं पहली कक्षा में थी बहन जी उसी स्कूल में दसवीं कक्षा में थी। मेरी छुट्टी उनसे एक पीरियड़ जल्दी हो जाती थी। हमारा घर नजदीक ही था। मैं आसानी से घर जा सकती थी। परन्तु मैं प्रतिदिन उनकी कक्षा के बाहर घर जाने के लिए उनका इंतजार करती, जब तक उनकी छुट्टी न होती।

हम दोनों बहुत अच्छी मित्र थी। हम बिना किसी झिझक के किसी भी बात के लिए बात कर सकते थे। फरवरी 2006 में मुझे किसी दवाई से या दवाइयों से बहुत ज्यादा reaction हो गया सबसे पहले मैं उन्हें ही बताने गई, यद्यपि मैं अपने कमरे से

उनके कमरे तक जाती बेहोश होकर गिर पड़ी। उसके बाद मेरी तबीयत इतनी खराब से खराब होती गई जिसमें उन्होंने मेरे लिए इतनी महत्वपूर्ण सेवाएँ की, मैं सारी सारी रात उल्टियाँ करती रहती, वह पूरी रात खड़ी होकर मेरा मुँह साफ करती रही, मेरी उल्टियाँ साफ करती रही। मैं 3 – 4 बार लम्बे समय तक अस्पताल में admit रही। तब भी उन्होंने लगातार मेरी पूरी जी जान से इतनी सेवा की कि जब तक उनकी स्वयं की सेहत ने जबाव न दे दिया। केवल इन दस सालों में ही नहीं इससे पहले जब मुझे PGI की दवाई का reaction हुआ, मेरा operation हुआ, मैं Inscol में admit हुई, सारी सारी रात एक एक मिन्ट में मुझे जरूरत पूरी कराने के लिए लेकर जाती रहीं, सारी रात जागती और मेरा ध्यान करती रही।

उनमें बच्चों जैसी इतनी बातें थी कि घर के सारे वातावरण को खुशनुमा बनाए रखती, बेफिकर रहती थी। वह घंटों कम्प्यूटर पर काम करके गुरू महाराज जी की किताबें टाइप करती रहती। उन्होंने घर को नए सिरे से बनवाने renovation करवाने के बाद पूरे घर को साफ किया। वह बहुत अच्छी कविता लिखती थी उन्होंने बहुत सारी कविताएँ लिखी। जो बहुत सुन्दर थी, कविता उनके अन्दर से बहती थी। वह बच्चों की सभा के लिए मेरे लिए लगभग हर साल नया भजन लिखती। उनमे से कुछ इतने प्रसिद्ध हो गए कि वो आज भी गाए जाते हैं।

इतनी उपकारी और अच्छी, प्यारी बहना को मैंने अपने घमण्ड और नीच घृणा से दुःखी भी किया है मैं उनसे इस सबके लिए माफी मांगती हूँ मैं उम्मीद करती हूँ वह मुझे माफ कर देंगी।

निसन्देह मेरी बीमारी और कष्टों में मेरे भाई, विजय और एकता ने मेरी बराबर से, लगातार सेवा और सहायता की। परन्तु बहन जी हमें इतनी जल्दी और अचानक छोड़ कर चली गई कि उनकी कमी बेहद महसूस हो रही है।

अन्त में मैं कहना चाहूँगी कि मैं इसीलिए जिन्दा हूं और चल फिर रही हूं कि इन सब ने जी जान से मेरी सेवा की और एक आयुर्वेदिक डाक्टर साहब ने भी 1½ साल मेरे ऊपर जान लगा दी।

देव आशीश :- बहुत ही प्यारी मम्मी! आप को मैंने कभी बहुत सन्मान के योग्य नहीं समझा। आप मेरे लिए एक दोस्त और बहन की तरह थीं। पहले जीजी पापा जी माँ बाप थे, फिर मामा जी सब कुछ। आपने तो अपने को मासिओं से भी पीछे रखा। मुझे सबसे जोड़ा और मुझपर कभी कोई हक नहीं जताया। आपने मुझसे कभी कोई उम्मीद न रख के completely unconditional प्यार दिया। कभी मैं किसी से नाराज होता तो मुझे सबके प्यार और उपकार ही दिखाती थीं। आपने सालों साल अनन्त अपमान और बदसलूकियाँ सह कर भी किसी की पीठ पीछे निंदा नहीं की। बल्कि हमेशा अपनी ही गल्ती देखतीं और कहतीं कि मुझे गुस्सा आजाता है जो नहीं आना चाहिए। आपको बहुत थकावट से या दिल पर चोट लगने से गुस्सा आता भी तो जल्द ही चला भी जाता। आपके दिल में जो था वही बाहर थ। आपके अंदर

बहुत सरलता और सादगी थी। आपने अपना मोह भी कम कर लिया था। अपने अंह को कम करने, अपनी गल्तियाँ देखने, और अपने को दीन बनाने का लगातार यत्न करती रहीं। आपकी हमेशा यह कोशिश होती थी कि मैं कैसे किसी के काम आ जाऊँ। आप थक कर भी सेवा में लगी रहती थीं और अपनी होश न लेतीं। कभी किसी से अपने लिए कुछ भी नहीं कराना चाहती थीं। अब भी मुझे सेवा का मौका दिए बिना ही चली गईं। आपकी सेवा, आपका प्यार आपकी हँसी, आपका बचपना, आपका चंचलता और ज़िंदादिली मुझे बहुत याद आएंगी।

सुरजीत कौर :-चाची जी के इस प्रकार अचानक चले जाने का बहुत अफसोस और हैरानी है। बचपन में चाचा जी हमें कहते कि जीवन पानी के बुलबुले की तरह है, पता नहीं कब चला जाए, यह बात समझ नहीं आती थी, अब समझ में आ रहा है। इसके लिए चौकस रहना है ओर गुरू महाराज की शिक्षा से जुड़े रहना है।

मेरी सम्मान के योग्य चाची जी, पानी के बुलबुले की तरह ही हमें छोड़कर चली गई। मुझे बेहद दुख है। वह बहुत ही सादा और सरल स्वभाव की थी। देवात्मा से उनका गहरा जुड़ाव था। मैं छोटी थी वह स्वंय बिमार होकर भी मेरा ख़्याल रखती थी। गुरू महाराज के जीवन की बातें बताती। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है। मेरे चाचा जी और चाची जी मेरी बात बहुत मानते थे। सप्ताह में एक बार मेरी पसन्द का खाना बनवाती थी। दुपहिर को मैं सोकर उठती, तो मेरे लिए fruit काटकर रखती, साथ बिठाकर खिलाकर बहुत खुश होती थी। मेरे साथी बच्चों को बुलाकर बिठा लेती और गुरू महाराज की पुस्तकें पढ़ने को देती। मुझे देव आरती सिखाई और हररोज़ हम साथ रात को देव आरती गाते और अब तक भी मैं गाती हूं।

वह मुझे 36-बी, में सभाओं में भेजती और फिर मेरे से पूछती कि सभा में क्या बताया। मेरी हर ज़रूरत का उन्होंने ध्यान रखा। उनके परलोक गमन के बाद मैंने परलोक के विषय में पढ़ा। विश्वास है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी। वह परलोक में चाचा जी के साथ रहें और उन दोनों का हमें आर्शीवाद मिले। मेरे भाई देव आशीश को भी सदा उन दोनों का आर्शीवाद मिले। उनकी बाधाएं दूर हों और उनका उच्च लोक में वास हो।

एकता (From Germany) :- मेरी भुआ मेरे लिए मां थी। मेरी दादी, शशी भुआ और छोटी भुआ ने मेरे पापा के साथ मिलकर मुझे बहुत सुन्दर ढंग से पाला है। मुझे यकीन ही नहीं होता कि वह चली गई। मैं बिल्कुल टूट गई हूं। उनके मार्गदर्शन से मैं यहां तक पहुँची हूं। मैं बहुत confused थी, परन्तु उन्होंने मुझे इतना उत्साह दिया कि मैं यहां तक पहुंच गई। किसी भी समस्या का सामना करने के लिए वह बहुत strong थी। मैं ओर छोटी भुआ उन जैसा बनने का सोचती। मेरा और उनका एक अनोखा साथ था। मेरी गैरहाज़री में उनके संग मैं पापा को सुरक्षित समझती थी। इस साल जब उन्होंने कहा कि मैं अमरीका नहीं जा रही तो हम सब खुश हो गए। मुझे तो अब भी ऐसा

लगता है कि वह अमरीका गई हैं। मैं बहुत ही उलझन में हूं। वह सदा कहती थी कि मैं अपने पापा की तरह बिना किसी तकलीफ के जाना चाहती हूं, उसी तरह ही चली गई। मैं बहुत डरी हुई हूं। वह परिवार की ज़िन्दगी थी, सदा जवान और जिन्दादिल थी। मेरे साथ games खेलती। मेरा उनके साथ वा सारे परिवार के साथ एक अटूट रिश्ता था। मैं उनसे अलग नहीं होना चाहती थी। उन्हें नहीं जाना चाहिए था। मुझे आगे बढ़ा हुआ देखना चाहती थी।

मुझे उनसे इतना प्यार था कि उसे express करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। शायद मरने के बाद मैं अम्मा, बड़े पापा और भुआ को मिल सकूं। मुझे आशा है कि वह हम सब की अब भी सहायता करेंगी।

विजय जी (Brother-in-law) :- मैं वास्तव में अनुभव करता हूं कि शशी बहन जी एक wonderful person थी। श्राद्ध में आए लोगों से पता लगता है कि वह कितनी popular थी।

मैंने कभी उनको अपनी सहायता के लिए नहीं कहा, परन्तु वह स्वंय ही इतना कुछ कर जाती, कि कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। वह बहुत तेज दिमाग और जिन्दा दिल थी। वह झटपट समस्या हल कर देती थी। ऐसे बहुत तरह से निपुण उनके व्यक्तित्व को हम भुला नहीं पाएंगे। वह जो भी उनके सम्पर्क में आता उसके साथ मित्रवत सम्बन्ध रखती थी। मैं जितने समय से भी उनको जानता था उसको मैं अपना सौभाग्य अनुभव करता हूं।

अजन्ता (पोती) :- वह बहुत ही दयालु, प्यारी, नम्र, geutle ओर wonderfull दादी थी। यह मैं बिल्कुल सत्य कह रही हूं। मैं आशा करती हूं कि एक दिन सब कहेंगे, "तुम अपनी दादी की तरह महान हो" यह सबसे बड़ा compliment है, जो कभी मुझे मिल सके। एक कविता लिख रही हूं "Sad, down, dark, alone, sadness, death bed, better place crying, mourning, bye"

एलोरा (दूसरी पोती) :- मैं उन्हें बहुत प्यार करती थी। वह मेरे हर दुख, सुख में खड़ी होने वाली थी। मैं ऐसी दादी पाकर अपने आपको बहुत खुशकिस्मत समझती हूं। मुझे उस समय उन पर बहुत प्यार आता था, जब वह हरमोनियम बजाती और मेरे लिए गाती थी। उनके साथ समय बिताना मुझे बहुत अच्छा लगता था।

किम (बच्चों की मां) :- मम्मी मेरे लिए क्या थी, हर तरह से स्वीकार्य, ध्यान रखने वाली, उत्साह बढ़ाने वाली, supportive और सबके साथ अपना दिल खोल देती थी। उनकी हंसी दिल में उतर जाती थी और ऐसा लगता था कि मेरा दिन सफल हो गया। आपको उनसे मिलते ही प्यार हो जाता था। वह बहुत दयालु थी, मैं उनको ज़िन्दगी में पाकर अपने आपको धन्य समझती हूं।

आशीश के मित्र (अमरीका से) :- सबने यह भाव प्रगट किए कि इस मौत को सुनकर उनके दिल टूट गए हैं। वह बहुत ही बुद्धिमान, दयालु और उदार हृदय रखती थी। हमारा घर आने पर सदा स्वागत

करती थी। उन्हें ज़िन्दगी के बारे में बहुत ज्ञान था। हम सबको उनके जाने का बहुत दुख है। हमारी सहानुभूति परिवार के साथ है।

रजिन्द्र (देव आशीश का एक और मित्र) मैं जब भी चण्डीगढ़ आता, मेरी छोटी छोटी ज़रूरतों का वह ख़्याल रखती। वह दिल की गहराई से बोलती थी। वह ऊंचे ऊंचे खुशी से हंसती। उनका देव समाज के प्रति समर्पण, गहरा विश्वास उनके हर बोल में झलकता था। मुझे उनके जाने का बेहद दुख है। परलोक में भी मेरी शुभ इच्छा उनके साथ है।

नीतू :- प्यारी भुआ जी, मेरा और आपका एक विशेष सम्बन्ध था। बचपन में आपसे भजन सीख कर गाना, आपके अपनेपन ने हमें दोस्त बना दिया। यहां अमरीका में भी आपके साथ बहुत अच्छा सम्बन्ध बन गया था, मुझे सदा कहती कि तुम मुझे बहुत प्यारी लगती हो। आपकी वह प्यारी मुस्कराहट, कभी न थकने वाला attitude, जो काम हाथ में लेना, उसे करके ही छोड़ना, दूसरों के लिए सेवा भाव, दूसरों में कमियां न देखना, खुद की कमियां देखना, यह सब हैरान कर देता था। आपकी यह विशेषता थी कि आपने किसी दुख, तकलीफ वा बिमारी को अपने पर हावी नहीं होने दिया। आपसे बहुत प्यार मिला है और मुझे पता है, आप जहां भी रहेंगी, हमेशा मुझे प्यार मिलता रहेगा क्योंकि आप ही कहती हमारा सम्बन्ध कभी न टूटने वाला है।

शिवानी :- मासी जी हमारी ज़िन्दगी की रोशनी थी। मैं जहां भी हूं, उन्हीं की बदौलत हूं। वह बहुत ही उत्साहित करने वाली, बच्चों जैसा निच्छल हृदय रखती थी। जबसे मेरी मां गई हैं, जैसे वह उनकी परछाई थी। परलोक में अवश्य वह मेरी मां से मिल गई होंगी और शान्ति में होंगी।

प्रभा गोयल (श्रीमान शादी लाल जी की बेटी) :- प्यारे आशीश मुझे बहन जी के स्वर्गवास से बेहद दुख पहुँचा है। तुम्हारी माता एक विशेष व्यक्तित्व रखती थी। मुझे उनसे फोन पर लम्बी लम्बी बातें करना बहुत याद आ रहा है। मेरे दुख के समय मुझे उनका बहुत सहारा था। आप सारे परिवार के लिए यह बहुत कठिन समय है। परिवार और समाज के लिए बहुत बड़ा घाटा है। मैं उन्हें बहुत miss करूंगी। मेरी सहानुभूति सारे परिवार के साथ है। परलोक वासी सम्बन्धी उनकी अवश्य सहायता करेंगे।

किशन सिंह चौहान :- आदरणीय बहन श्रीमति शशी जी के देहांत की खबर सुनकर हम सबको बड़ा दुख पहुँचा। ऐसा नही लगता था कि वे इतनी शीघ्र बिछुड जायेगीं।

सन् 1965 ई० से मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिलता रहा। मैने कभी भी उनके मुँह से किसी की बुराई या निन्दा नहीं सुनी। वह सुशिक्षित एवं शान्त स्वभाव की हमेशा दूसरों पर अच्छे प्रभाव डालने वाली सेविका रही हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अटल श्रद्धावान और अपने माता-पिता की आज्ञाकारी सत-सन्तान होने का उच्च दृष्टान्त छोड़ गई। परलोक में वह अपने माता-पिता एवं उच्च कर्मचारीयों के पास जाकर अपना अधिक विकास करेंगी। मैं उनके उच्च

जीवन का सम्मान करता हूँ। और आशा करता हूं कि परलोक से हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

चमन लाल :-बहुत ही सन्मान के योग्य प्यारी बहनजी! आप अब हमारे बीच नहीं रही, यह सोचकर विश्वास ही नहीं होता। ऐसा लगता है कि जैसे कोई स्वप्न तो नहीं आ रहा है। बहन जी जब मैं चण्डीगढ़ आया तो कुछ नहीं काम करना आता था, आपने मेरे को एक एक काम सिखाया। दाल सब्जियां कैसे बनाते है? घर का काम कैसे करते हैं? सब कुछ बारीकी से सिखाया। मुझे काम करने के योग्य बनाया। कभी काम में गल्ती होती तो आप डाँटा भी करती पर आपने मुझे सारी जिन्दगी भर काम करने योग्य बनाया। बहन जी आपने मेरे बच्चो के लिए भी बहुत कुछ किया। अच्छे से अच्छे कपड़े खरीद कर दिए। खिलौने दिए। अच्छे से रहने योग्य बनाया। आपका यह उपकार मैं कभी भी नहीं भूलूंगा आपकी बात कड़वी जरूर लगती थी पर आपने मेरा, मेरे परिवार का हमेशा भला ही किया। बहनजी मैने आपको कई बार अपनी अकड़ मे आकर बुरा भला भी कहा है, मुझे माफ कर देना। जीते जी तो मैने आपसे कभी माफी नहीं मांगी, अब मैं सच्चे दिल से आपसे क्षमा चाहता हूं।

मधू सूदन जी :-बहन जी आपके उपकारों ने मुझे लिखने के लिए विवश कर दिया। शमशान भूमि पर सिर झुका नमन कर वापिस घर आ गया। बहन जी आपके बहुत सारे उपकार हैं जिसे गिनाया नहीं जा सकता। आपकी मृत्यु से घर व समाज को बहुत बड़ा घाटा हुआ है, जो शायद पूरा न हो सके। आप गुरू महाराज जी की शिक्षा को बहुत बारीकी से जानती थी और बहुत सरलता से समझा देती थी। कई बार हमारे दुख: में साथ दिया। हाल, चाल पूछते रहे, दवा एवं फल कपड़े एवं गुरू महाराज जी की लिखी किताबें दी और भी अनेकों उपकार पाए हैं। मेरी भगवान देवात्मा, व पापा जी, व माता जी व अन्य सभी सहायकारी शक्तियों से विनम्र प्रार्थना हैं कि आपको आगे से आगे जाने में सहायता प्राप्त हो आपके पुत्र, देव आशीश, बड़ी बहन जी व भाई साहब, व अन्ना जी व छोटी बहन जी अन्य सब को धैर्य प्राप्त हो। यही मेरी मंगल कामना है।

आशोका जी :- मेरी सच्ची हमदर्द वा सलाहकार मेरी प्रिय बहन जी का इस प्रकार चले जाना, समाज वा परिवार के लिए बहुत घाटा है। आपका गुरू की शिक्षा पर अडिग विश्वास था। आप सब का साथ देती थी, आप मेरी प्रेरणा थी। आप दीन और कृतज्ञ थी। बहुत हददर्द थी। मैं जब अहमदाबाद में बिमार थी, तो मुझे फोन कर करके हौसला बन्धवाती थी। आप भगवान के मिशन की कार्यकर्ता थी। किताबें छपवाने में आपका बहुत बड़ा योग दान है। मैं अपना सारा दुख, सुख बहन जी से share कर लेती थी। मुझे उन्होंने परलोक का ज्ञान दिया। आपसे बहुत प्यार मिला। परलोक में आपको उच्च धर्म सम्बन्धी मिलें। आपका सब प्रकार से भला हो, ऐसी मुझ तुच्छ की कामना है।

पूजा महरा :– प्यारे भुआ जी सचमुच विश्वास नहीं होता कि आप इस संसार से चली गई हैं

शेष पृष्ठ 20 पर

शुभ संग्राम

कल्याण :- 11 अक्तूबर 2016 को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से पटियाला गए, वहां से आगे संगरूर पहुंचे। डाक्टर नवजोत जी के परिवार को मिले और उन्हें होने वाले सत्संग के लिए उत्साहित किया। भुच्चो से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी साथ शामिल हो गए। फिर दोनों साथी पूहला पहुंच कर सरदार गुरनाम सिंह जी को मिले और वहां सरदार शिवशाम जी के परिवार को भी मिले। वहां उन स्थानों के भी दर्शन किए जहां गुरू महाराज के पवित्र चरण पड़े थे और वहां देव प्रभावों का भी कारज होता रहा है। सरदार हरनाम सिंह जी की हवेली को भी प्रणाम किया, जो अब खण्डरात में बदल चुकी है। पुराने वरिष्ट सेवक सरदार साहिब सरदार मोता सिंह जी की आज की पुश्त को मिलकर तो श्रीमान बलदेव सिंह जी बहुत तृप्त होते रहे और उपरोक्त सरदार साहिब और उनके परिवार और उनके स्कूल से प्राप्त किए बहुत कीमती उपकारों को याद करके ब्यान करके गद् गद् होते रहे। सरदार हरनाम सिंह जी का जीवन चरित्र भी भेंट करके आए। वहां से रवाना होकर दोनों साथी 7 बजे के करीब कल्याण पहुँचे। वहां ठहरकर उस दिन और अगले दिन तीन सभाएं की गई। धर्म सम्बन्धियों को मिलना जुलना भी होता रहा।

गोनियाना मण्डी :- 12 अक्तूबर शाम को मास्टर हरबंस लाल जी के घर सभा रखी गई, जिसमें बताया गया धर्म की क्या ज़रूरत है? सत्य धर्म क्या होता है? उसे प्राप्त करने के क्या तरीके हैं? 13 अक्तूबर को सुबह 8.30 बजे सभा की गई, उसमें बताया गया मनुष्य को नीच कौन बनाता है। नीच भावों की भयानकता को पेश किया गया और उससे बचने और मुक्त होने के विषय में बताया गया। उच्च भाव ही मनुष्य को भला वा धार्मिक बनाते हैं। उनकी सुन्दर तस्वीर पेश की गई।

शाम को 8.00 बजे फिर सभा की गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बड़े सुन्दर ढंग से नीच जीवन द्वारा पैदा किए जाते सम्बन्धों में नर्क ओर दुर्दशा को पेश किया। उच्च भावों से सम्बन्धों में उच्च मेल वा मिठास के सुन्दर दृश्य पेश किए। गुरू महाराज के प्रभावों की महिमा को ब्यान किया कि कैसे उनके प्रभावों द्वारा सम्बन्धों का नर्क दूर होता है और उच्च परिवर्तन आता है, वह घटनाओं द्वारा स्पष्ट किया गया।

14 अक्तूबर सुबह 8.30 बजे एक सभा की गई। इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि किस प्रकार सुख अनुरागी मनुष्य के लिए देवात्मा को पहचानना और उनकी शिक्षा को समझना कठिन है। तीन चार बातों को भी हृदयग्राही करके बहुत भला हो जाता है। पापों से बचना और गहराई से मिथ्या को समझना और बचना, जहां तक सम्भव हो सभाओं में योग देकर लाभ उठाना ही बहुत बड़ा लाभ है। हररोज़ कोई न कोई सेवा करने का यत्न करना। इस प्रकार

यहां का संग्राम हुआ और 620 रूपये दान आदि प्राप्त हुए।

संगरूर, शाम 8.00 बजे सभा रखी गई। गजसिंह पुर, गंगानगर, यमुनानगर, और अगले दिन चण्डीगढ़ से भी सत्संगी पहुँच गए थे। इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने गुरू महाराज के प्रभावों की आवश्यकता को बताया जिनके द्वारा हमारा आत्म अन्धकार दूर होता है। किस प्रकार हमारे सम्बन्धों का नर्क दूर हो सकता है, देव प्रभावों द्वारा पैदा किए स्वर्ग के उदाहरण पेश किए।

15 अक्तूबर, 8.30 बजे सुबह :- इस सभा में मौड़ों से भी एक जन आकर शामिल हुए। इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मनुष्य जाति की अन्धकारमय अवस्था का ज़िकर करते हुए बताया कि मनुष्य की सबसे कीमती वस्तु क्या है? उसकी सबसे बड़ी हानि क्या है? सबसे बड़ा लाभ क्या है? जीवन का लक्ष्य क्या है? गुरू महाराज की रोशनी में इन प्रश्नों के उत्तर दिए और सत्संग की आवश्यकता पर ज़ोर दिया, इसके लिए धन ओर समय का त्याग सफल होता है।

15 अक्तूबर, 4.00 बजे शाम :- इस सभा में सच्चे धर्म, उसकी आवश्यकता और उसके लाभ के विषय में बताया गया। धर्म पाने के लिए नीच जीवन से निकलना और फिर परसेवा के भावों को पैदा करना आवश्यक है। अपनी अपनत्व से निजात पाना और उच्च भावों को पैदा करना, इसमें मनुष्य की असली खुशी है। इससे हमारी मुख्य वस्तु जीवनी शक्ति बलवान होती है।

16 अक्तूबर, ईतवार सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भजन, देव स्तोत्र के गान वा व्याख़्या के बाद उच्च भावों से भरकर दीनता पूर्वक सहाय प्रार्थना की। उन्होंने बताया कि इस दुनिया में बहुत धर्म हैं और नये से नये धर्म पैदा हो रहे हैं, पर ज़ुल्म, अत्याचार, भ्रष्टाचार बढ़ रहे हैं। किसी धर्म के पास मनुष्य को अपना आप दिखाने का शीशा नहीं। विकास क्रम में देवात्मा के भीतर अद्वितीय देव ज्योति विकसित हुई है। जो मनुष्य के नीच जीवन को दिखाती है और उनका तेज नीच जीवन से निकलने का बल देता है बहुत से उदाहरण प्रस्तुत किए। कई पढ़े लिखे जनों ने इस सत्संग से लाभ उठाया, बाद में पेड़े बांटे गए। 700 रूपये दान एकत्र हुआ। डा० नवजोत जी और उनके परिवार ने बहुत सेवा की। काफी सीमा तक यह संग्राम सफल रहा।

एक हाजरीन

दान प्राप्ति

श्राद्ध सभा डा० शशि बाला	25,000	गोनियाना मण्डी	620
श्री बलवंत राए अरोड़ा कैनेडा	5,000	गज सिंह पुर (Raj)	500
श्री मोती लाला ग्रोवर	1,100		

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

बाकी पृष्ठ 17 का

और सदा के लिए चली गई हैं। मुझे याद है कि आखिर बार हम डेराबस्सी सभा में मिले थे, आपको अच्छी सेहत में देखा था। अचानक आपकी मृत्यु का सुनकर बहुत सदमा लगा आपका प्यार और मेहरबानियां और हंसता हुआ चेहरा सामने आ रहा है। मैंने 14 - 15 वर्ष आपके साथ गुज़ारे हैं। आपने सदा ही मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है। कभी आप डांटती भी तो मेरे भले के लिए। मेरे काम में हमेशा सहायता करती। जब मैं 5 वीं कक्षा में थी तो मैं हिन्दी में कमज़ोर थी। आपने मेरी कमी को दूर किया। उस सहायता ने मुझे हिन्दी में योग्य बनाया। इस प्रकार की इतनी सेवाएं हैं जो मैं एक सफे में व्यक्त नहीं कर सकती। आपने मुश्किल समय में मेरे परिवार की सहायता की। सभा सुनने को कहती, इससे अधिक कभी मुझसे कुछ नहीं चाहा। आप मेरी ज़िन्दगी में एक Angel थी, अब जब आप हमसे जुदा हो गई हैं तो मैं आपकी शान्ति के लिए प्रार्थना करती हूं।

समय काफी हो गया था। शुभ कामना सम्बन्धी "हे देह त्यागी सम्बन्धी हमारे" नामक भजन का गान किया गया। फिर सभापति जी ने गहरे दिल के भावों से शुभ कामना की। फिर सबको जलपान, चाय आदि का सेवन करवाया गया। हाजरीन की तरफ से 2070 रूपये दान प्राप्त हुआ खेड़ा साहिब ने 25,000 रुपये का चैक गुरू मिशन के लिए दिया। चार बार जय ध्वनि के यह श्राद्ध की सभा सम्पन्न हुई।

-एक सेवक

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts